अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)

रासो काव्य

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

Scanned with CamScanner

हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल में प्राप्त ग्रन्थों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस युग के अधिकांश ग्रन्थों में 'रासो' शब्द नाम के अन्त में जुडा हुआ है, जो 'काव्य' शब्द का पर्यायवाची है। 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। प्रथम फ्रेंच इतिहासकार गार्सा द तासी ने इस शब्द की व्युत्पत्ति 'राजसूय' यज्ञ से मानी है। आ. रामचन्द्र शुक्ल इस शब्द की व्युत्पत्ति 'रसायण' से मानते है। उनका कहना है कि– ''कुछ लोग इस शब्द का सम्बन्ध 'रहस्य' से जोडते है। पर 'बीसलदेव रासो' में काव्य के अर्थ में 'रसायण' शब्द बार–बार आया है। अत: हमारी समझ में इसी 'रसायण' शब्द से होते होते 'रासो' हो गया है। डॉ. मोतीलाल मेनरिया ने इस शब्द का सम्बन्ध 'रहस्य' से माना है। श्री नरोत्तम स्वामी इस शब्द की व्युत्पत्ति 'रसिक' से मानते है। प्राचीन राजस्थानी में 'रसिक' का अर्थ–कथा–काव्य माना जाता था। यही शब्द क्रमश: 'रासउ', और 'रासो' हो गया। यह मत हमें सत्य के काफी नजदीक पहुँचा देता है। प्रधान रुप से कथा–ग्रन्थों के लिए ही 'रासा', 'रासक', 'रासो' शब्द का प्रयोग होता आया है। कुछ विद्वान इस शब्द का सम्बन्ध 'रास' या 'रासक' से जोडते हुए इसका अर्थ–ध्वनि, क्रीडा, विलास, नृत्य, गर्जन और श्रृन्खला आदि देते है। आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी रासक को एक शब्द भी मानते हैं और काव्य–भेद भी। उनके अनुसार जो काव्य रासक छन्द में लिखे जाते थे, वे ही हिन्दी में 'रासो' कहलाने लगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल की कविता के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ करता था। ये काव्य चरित्रप्रधान है। इन चरित्रों को काव्य में बाँधने के लिए ही इस छन्द का प्रयोग होता रहा है। वस्तुत: रासो काव्य मूलत: रासक छन्द का समुच्चय है। अपभ्रंश में उनतीस मात्रा का एक रासा या रास छन्द प्रचालित था। ऐसे अनेक छन्दों के गान की परम्परा कदाचित लोकगीतों में रही होगी। एकरसता न रहे, इसलिए बीच बीच में दूसरे छन्द जोडने और गाने की प्रथा भी उस समय से चली होगी। 'सन्देशरासक' इसका सुन्दर नमूना है। पहले रासो काव्य छन्द में लिखे गये। कालान्तर में इनमें बदलाव आया होगा जिनके फलस्वरुप गेय मुक्तक छन्दों का उपभोग किया जाने लगा। 'बीसलदेव रासो' एक ऐसा ही प्रेम प्रधान काव्य है जिसमें रासकेतर छन्द का प्रयोग हुआ है। आगे चलकर काव्य का यह रुप कोमल भावनाओं के अतिरिक्त अन्य भावों की अभिव्यक्ति का वाहक बना। प्रेम भाव के साथ इनमें वीरों की गाथात्मक चेतनाओं को स्थान मिला। इस तरह इस काल के रासो काव्य में एक साथ विरोचित और श्रृंगारोचित भावनाओं के वर्णन सुलभतापूर्वक मिल जाते है।

रासो साहित्य मूलत: सामंती–व्यवस्था, प्रकृति और संस्कार से उपजा हुआ साहित्य है, जिसे 'देशीभाषा काव्य' के नाम से भी जाना जाता है। इस साहित्य के रचनाकार हिन्दू राजपूत राजाश्रय में रहनेवाले चारण या भाट थे। समाज में उनका स्थान और सम्मान था, क्योंकि उनका जुडाव सीधे राजा से होता था। ये चारण या भाट कलापारखी और कलारचना में निपुण होते थे। ये कुशलता से युध्द करना भी जानते थे और युध्द शुरु होने पर अपनी सेना की अगुवाई विरुदावली गा– गाकर किया करते थे। ये राजाओं, आश्रयदाताओं, वीर पुरुषों तथा सैनिकों के वीरोचित युध्द घटनाओं को केवल बढ़ा चढाकर ही नहीं, उसकी यथार्थपरक स्थितियों एवं सन्दर्भों को भी बारीकी के [illegible] करते थे। वीरोचित भावनाओं के वर्णन के

Scanned with CamScanner

लिए इन्होंने 'रासक या रासो' छन्द का प्रयोग किया था, क्योंकि यह छन्द इस भावना को सम्प्रेषित करने के लिए अनुकूल था। इसलिए इनके द्वारा रचित काव्य को 'रासो काव्य' कहा गया। रासो काव्य परम्परा के प्रतिनिधि ग्रन्थ इस प्रकार है–

१. खुमाण रासो :–

रासो काव्य परम्परा की प्रारम्भिक रचनाओं में 'खुमाणरासो' का स्थान सर्वोपरि है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख शिवसिंह सेंगर की कृति 'शिवसिंह सरोज' में मिलता है। इसके रचयिता दलपति विजय हैं। आ. रामचन्द्र शुक्ल इसको नवीं शताब्दी (सन् ८१२ ई.) की रचना मानते हैं। इसमें राजस्थान के चितौड–नरेश खुमण (खुम्माण) द्वितीय के युध्दों का सजीव वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ भी प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति पूना–संग्रहालय में सूरक्षित है। खुमाण रासो 'पाँच हजार छन्दों का एक विशाल ग्रन्थ हैं। इसमें समकालीन राजाओं के आपसी विवादों के बाद हुए एकता के साथ अब्बासिया वंश आलमामूं खलीफा और खुमाण के साथ हुए युध्द का चित्रण मिलता है। इस कृति का प्रमुख प्रतिपाद्य राजा खुमाण का चरित्रान्कन करना है उनके चरित्र के दो प्रस्थान बिन्दु हैं–एक युध्द और दूसरा प्रेम। खुमाण के प्रेम को दर्शाने के लिए ही कृतिकार ने विवाह, नायिका भेद, षट्ऋतुवर्णन का विस्तृत वर्णन किया है जो रमणीय है। अन्य रासो ग्रन्थों के समान इसमें भी श्रृन्गार और वीर –दोनों रस प्रधान रहे हैं। इसमें दोहा, सवैया, कवित्त आदि विविध छन्दों का सुचाख प्रयोग हुआ है। इसकी भाषा राजस्थानी हिन्दी रही है काव्य सौन्दर्य भाषाशैली की दृष्टिसें यह एक सरल और सफल काव्य माना जाता है। इसकी सरस,सरल भाषा शैली का उदाहरण दृष्टव्य है –

'' पिउ चितौड न आविऊ, सावण पहली तीज।
जोवै वाट विरहीणी, खिण खिण अणवै खीज।।
सन्देसो पिउ साहिबा, पाछो फिरिय न देह।
पंछी घाल्या पिंजरें, छूटण रो सन्देह।।''

२. परमाल रासो :–

रासो काव्य परम्परा की प्रमुख कृति के रुप में 'परमाल रासो' का नाम भी लिया जाता है। इसे 'आल्हाखण्ड' भी कहते है। आ. रामचन्द्र शुक्ल ने इसे 'बैलेड' तथा डॉ. रामकुमार वर्मा ने इसे 'वीरगाथा' काव्य कहा है। कुछ विद्वान इसे 'विकसनशील लोक महाकाव्य' मानते है। इसकी जनता में अत्यधिक लोकप्रियता को देख डॉ. ग्रियर्सन ने इसे वर्तमान युग का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य माना था। अभी तक इसकी प्रामाणिक प्रति उपलब्ध नहीं हुई है। इसके रचयिता जगनिक है, जो महोबा के नरेश परमर्दि देव वे आश्रित थे। रचनाकार ने इस काव्य में महोबा देश के दो लोक–प्रसिध्द वीरों– आल्हा और ऊदल के वीर चरित्र को यथार्थ ढंग से प्रस्तुत किया है। इनके द्वारा किये गये विभिन्न युध्दों का बडी उत्तेजक भाषा में वर्णन इस ग्रन्थ की विशेषता है। इस में आल्हा छन्द (वीर छन्द) का प्रयोग हुआ है। इसकी भाषा बैसवाडी है। यह काव्य शिक्षित समाज की अपेक्षा अशिक्षित या अर्ध्द–शिक्षित समाज में ही अधिक लोकप्रिय रहा है। यह सदैव गायकों की परम्परा द्वारा ही विकसित होता रहा है। यह एक गेय–काव्य है। इसकी मूल प्रेरणा वैयक्तिक वीर भावना, स्वाभिमान, दर्द और

Scanned with CamScanner

साहसपूर्ण भावों का वर्णन करने की रही है–

''बारह बरिस है कूकुर जिएँ, औ तेरह लै जिएँ सियार।
बरिस अठारह छत्री जिएँ, आगे जीवन को धिक्कार।।''
सदा तरैया न बन फूलै, मारो सदा न सावन होय।
स्वर्ग मडैया सब काडूँ को, यारो सदा न जीवै कोय।।''

३. हम्मीर रासो :–

'हम्मीर रासो' अभी तक एक स्वतंत्र कृति के रुप में उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश के 'प्राकृत पैंगलम्' नामक एक संग्रह–ग्रन्थ में संग्रहीत हम्मीर विषयक ८ छन्दों को देख आ. शुक्लजी ने इसे एक स्वतंत्र ग्रन्थ मान लिया था। प्रचलित धारणा के अनुसार इस कृति के रचयिता शार्डग:धर माने जाते है। परन्तु कुछ पदों में 'जज्जल भणह' वाक्यांश देख पं. राहुल सांकृत्यायन ने इसमें जज्जल नामक किसी कवि की रचना माना है। आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का कहना है कि 'प्राकृत पैंगलम्' की टीका में भी इन्हें जज्जल की ही उक्ति माना गया है; अत: इसके रचयिता शार्डग:धर न होकर जज्जल है। इस कवि में हम्मीर देव और अल्लाउद्दीन के युध्द का वर्णन किया गया है। इसका रचनाकाल १३ वीं शती माना जाता है, क्योंकि हम्मीर देव सन् १३०० ई. में अल्लाउद्दीन की चढाई में मारे गये थे। इस कृति का उद्देश्य हम्मीर देव की वीरता का वर्णन करना है।

४. विजयपाल रासो :–

मिश्रबन्धुओं ने अपने ग्रन्थ 'मिश्रबन्धु विनोद' में इस परम्परा की एक रचना 'विजयपाल रासो' का उल्लेख किया है। इसके रचयिता नल्हसिंह भाट माने जाते है। इसका रचनाकाल सन् १२९८ ई. माना जाता है। डॉ. राजनाथ शर्मा के अनुसार इस कृति में विजयपाल सिंह और बंग राजा के युध्द का वर्णन किया गया है। डॉ. राजबली पाण्डेय के अनुसार इस रचना में रचनाकार ने राजा विजयपाल सिंह और बंग राजा के बीच हुए युध्दों को सजीव रुप में चित्रित किया है। इस कृति में केवल ४२ छन्द ही उपलब्ध है।

५. बीसलदेव रासो :–

'बीसलदेव रासो' इस काव्य–परम्परा की पाँचवी कृति है। इसकी रचना– ''बारह से बरोत्तरा मंझारि। जेठ बदी नवमी बुधिवारी'' के अनुसार जेष्ठ वदी नवमी, दिन बुधवार सन् ११५५ ई. (संवल १२१२) में हुई थी। इसके रचयिता नरपति नाल्ह माने जाते हैं, जो अजमेर के चौहाण राजा बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) के समकालीन थे। इसमें अजमेर नरेश विग्रहराज, उपनाम बीसलदेव और उनकी पत्नी, राजा भोज की पुत्री राजमती के विवाह, कलह, विरह और मिलन के मार्मिक चित्र अंकित किये गये है। इस ग्रन्थ की सबसे निराली विशेषता यह है कि यह हिन्दी के अन्य रासों ग्रन्थों के समान वीरता का प्रशस्तिगायन न होकर कोमल प्रेम के मधुर, मार्मिक और संवेदनशील रुप का अमर चित्र है। विप्रलम्भ–श्रृन्गार इसका प्रधान वर्ण्य विषय है। चार खण्डों में विभाजित सवा सौ छन्दों का यह छोटा सा काव्य प्रणय सम्वेदना का द्रवणशील, हृदयग्राही रुप प्रस्तुत करता है। इसके प्रथम खण्ड में बीसलदेव और

Scanned with CamScanner

मालवा के भोज परमार की कन्या राजमती का विवाह वर्णन, दूसरे खण्ड में बीसलदेव का रानी से रुढकर उडिसा जाना तथा वहाँ बारह वर्षों तक रहना, तीसरे खण्ड में राजमती का विरह वर्णन तथा बीसलदेव का उडीसा से लौटना और चौथे खण्ड में भोज का अपनी पुत्री को अपने घर ले आने की कथा तथा बीसलदेव का उसे पुन: चित्तौड लौटा लाने का प्रसंग वर्णित है। यह सारी कथा ललित मुक्तकों में कही गई है।

'सन्देश रासक' की भाँति बीसलदेव रासो भी मुख्यत: विरह काव्य है। यह ग्रन्थ विरह के स्वाभाविक चित्र, संयोग और विप्रलम्भ श्रृन्गार की सफल उद्भावना और साथ ही प्रकृति के रुप चित्रों से परिपूर्ण है। इस ग्रन्थ की सबसे बडी विशेषता यह है कि विविध घटनाओं के वर्णनों के होते हुए भी इस काव्य में इतिवृत्तात्मकता नहीं है। नायिका राजमती का चरित्र बडा ही सजीव तथा विलक्षण बन पडा है। ''मध्य युग के समूचे हिंदी साहित्य में जबान की इतनी तेज और मन की इतनी खरी नायिका नहीं दीख पडती है। '' राजा बीसलदेव ने एक दिन राजकीय अभिमान की रौ में कहा कि मेरे समान दूसरा भूपाल नहीं। रानी राजमती से यह मिथ्याभिमान न सहा गया। उसने कहा कि उडीसा का राजा तुमसे धनी है। जिस प्रकार तुम्हारे राज्य में नमक निकलता है, उसी तरह उसके घर में हीरे की रवानों से हीरा निकलता है। राजा इस पर जल-भून गया और रुट गया तथा रानी कें लाख अनुनय-विनय करने पर भी उडिसा निकल गया। राजमती जबान की तेज है तो क्या हुआ, आखिर है तो नारी ही। विरह से उसका ह्रदय वीदीर्ण हो जाता है, उसे अपने स्त्री-जीवन पर रोना आता है। महेश (परमेश्वर) को उलाहना देती हुई वह कहती है कि-

''अस्त्रीय जनम काई दीघउ महेश
अवर जनम धारइ घना रे नरेश,
रानि न सिरजीय रोझडी,
घणह न सिरजीय धवुलिय गाई।''

अर्थात ''स्त्री का जन्म तुमने क्यों दिया ? देने के लिये तो तुम्हारे पास और भी अनेक जन्म थे। राजराणी का जन्म न देकर यदि वन खण्ड की काली कोयल भी बनाया होता तो आम और चम्पा की डाली पर तो बैठती, अंगूर और बीजोरी के फल तो खाती। वास्तव में राजमती का यह कथन वासनाभिभूत मध्ययुगीन पुरुष के स्वार्थ और उसकी अति कामुमतामयी रसीकता की शिकार बनी हुई मध्ययुगीन नारी की आत्मा का करूण क्रन्दन एवं चीत्कार है। राजमती की आत्मा विद्रोहिणी, मन अभिमानी और जबान प्रखर है। बारह वर्ष के पश्चात् राजा के वापस लौटने पर रानी की कैची जैसी जबान ने फिर बार कर दिया, उसने राजा को ताना मार ही दिया कि- 'स्वामी घी विणाजे यह नइ जीतियड तेल'। अर्थात् हे स्वामी! तुमने वाणिज्य तो घी का जरुर किया किन्तु स्वयं खाया तेल ही। इतनी सुन्दर नारी से विवाह तो किया, किन्तु उसके उपयोग करने का सौभाग्य तुम्हें न मिल सका। अभिव्यक्ति की ताजगी और भावों की तीव्रता के कारण बीसलदेव रासो लोकजीवन के रंग में अधिक रंगा हुआ है। राजमती के वियोग वर्णन के लिए कवि ने जो बारहमासा दिया है वह अपने ढंग का अकेला है।

६. पृथ्वीराज रासो :-

रासो काव्य परम्परा का सर्वश्रेष्ठ एवं प्रतिनिधि ग्रन्थ पृथ्वीराज रासो है। आ. शुक्लजी ने इसे हिन्दी का प्रथम महाकाव्य और इसके रचयिता चंदवरदाई को हिन्दी का प्रथम

Scanned with CamScanner

कवि माना है। चंदवरदाई दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहाण के प्रमुख सामंत सलाहकार, मित्र और राज कवि थे। इनके विषय में प्रसिध्द है कि पृथ्वीराज और चंदवरदाई दोनों का जन्म एक ही दिन और मृत्यु भी एक ही दिन हुई थी। कवि चन्द के चार पुत्र थे, जिनमें से चतुर्थ पुत्र जल्हण था। जिस समय पृथ्वीराज को मुहम्मद गौरी बन्दी बनाकर गजनी ले गया तो उस समय चन्दवरदाई भी उसके पीछे गए और अपने पुत्र जल्हण को अपनी अधूरी रचना 'पृथ्वीराज रासो' सौंप गए थे। इस सम्बन्ध में यह उक्ति प्रसिध्द है–

'पुस्तक जल्हण हाथ दै, चलि गज्जन नृप काज। ' बाद में जल्हण ने इस अधूरी रचना को पूरा किया था।

पृथ्वीराज रासो के बृहत, मध्यम, लघु और लघुतम चार संस्करण प्रसिध्द है। इन चारों संस्करणों को देखकर पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता को लेकर विद्वानों के तीन वर्ग है। विद्वानों का एक वर्ग पृथ्वीराज रासो को पूर्णतया जाली एवं अप्रामाणिक मानने वालों का है जिसमें डॉ. बूलर, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, मुंशी देवीप्रसाद, आ. रामचन्द्र शुक्ल आदि विद्वान प्रमुख है। दूसरा वर्ग पृथ्वीराज रासो को प्रामाणिक रचना मानने वाले विद्वानों का है। इस वर्ग में डॉ. श्यामसुन्दरदास, मोहनलाल विष्णुलाल पंडया, मिश्र बन्धु, कर्नल टाड आदि विद्वान आते है। विद्वानों का तीसरा वर्ग पृथ्वीराज रासो को अर्ध्दप्रामाणिक रचना मानने वालों का है। इस वर्ग में आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी आदि. विद्वान है।

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता भले ही संदिग्ध हो, परंतु काव्य–सौन्दर्य की दृष्टि से यह बेजोड है। इसे महाभारत के समान विकसनशील महाकाव्य माना जाता है। रस की दृष्टि से इसमें श्रृंगार और वीर रस दोनों का सुन्दर परिपाक हुआ है। ये दोनों रस पृथ्वीराज चौहाण के व्यक्तित्व के दो पहलुओं को उद्‌घाटित करते है। वीर और श्रृंगार रस दोनों रसों की पृष्ठभूमि में नारी है। उसे पाने के लिए युध्द होते है और पा लेने पर जीवन का विलास पक्ष अपनी पूरी रमणीयता के साथ उभरता है। युध्द वर्णन में जहाँ कवि ने शौर्य एवं वीरता के प्रदर्शन में अपनी कलम की शक्ति दिखाई है वहाँ श्रृन्गार रस के सरस वर्णनों में भी अपनी अद्‌भूत कल्पना–शक्ति का परिचय दिया है। वीर रस का वर्णन हो अथवा श्रृन्गार रस का, कवि ने नैतिकता की सीमा का उल्लंघन नहीं किया है, जिससे दोनों रसों का निर्वाह संतुलित एवं सात्विक हुआ है। शहाबुद्दीन की सेना के साथ हुए पृथ्वीराज के युध्द का वर्णन करते हुए कवि पृथ्वीराज के युध्द– कौशल की विशेषता बताते हुए कहते है–

''थकि रहे सूर कौतिक गिगन, रगन–मगन भई श्रोन धर।
हदि हरणे वीर जग्गे हुलस, हुरेड रंगि नवरत्त वर।।''

अर्थात् पृथ्वीराज चौहान के युध्द, कौशल एवं वीरता को देखकर सूर्य भी स्तंभित होकर ठहर गया। इस युध्द में हुए नरसंहार से सारी धरती रक्त से भर गई। ऐसे युध्द को देखकर वीर योध्दा उल्लास से भर उठे तथा उनके चेहरों पर प्रसन्नता से रक्त की लालिमा छा गई।

इच्छिनी, संयोगिता और शशिव्रता के विवाह प्रसंगों में, नायिका के सौन्दर्य–वर्णन में, विवाहोपरान्त प्रथम रति के दृश्यों में श्रृन्गार रस का सरस वर्णन कवि ने किया है। कवि ने इच्छिनी की सौन्दर्य शोभा का, प्रथम समागम की उमंग के साथ ही भय, कंपन आदि का बडा सुन्दर वर्णन किया है। वह सर्वांग में काम की तरंग के रहते हुए भी प्रथम केलि के समय ऐसे काँपती है, जैसे मंद वायु के हलके झकोरे से लता–

Scanned with CamScanner

''हल हलै लता कछु मंद वाय. नव वधू केलि भय कंप पाय।
उपमा उर कव्वि कहिय तांम, जुव्वन तरंग अंगि अंगि काम।।''

वीर और श्रृन्गार रस के अतिरिक्त अन्य रसों करुण, रौन्द्र, बीभत्स आदि की भी सम्यक योजना की है। पृथ्वीराज जब शशिव्रता को खींचकर घोडे की पीठ पर बैठा लेता है, तो उस समय प्रतिरोध के कारण पृथ्वीराज में रौद्र, शशिव्रता में करुण, सामन्तों में वीर, सखियों में हास्य, शत्रुओं में वीभत्स और कमधज्ज वीरचन्द में भयानक रस एक साथ दिखाई पडते है।

वस्तु–वर्णन की दृष्टि से भी रासो का सौन्दर्य अतुलनीय है। इसमें नगर, उपवन, वन, सेना, युध्द के वर्णनों के अतिरिक्त ऋतुवर्णन, नख–शिख सौन्दर्य वर्णन भी अति सरस है। पृथ्वीराज रासो में युध्द वर्णन के लिए डिंगल भाषा तथा श्रृन्गार वर्णनों में पिंगल भाषा का प्रयोग हुआ है। रासो–काव्य परम्परा में यह एक अद्वितीय काव्य है और आदिकालीन काव्य की प्रवृत्तियों का विवेचन मुख्यत: इस काव्य को आधार बनाकर ही किया जाता है जिससे इसका महत्व स्वत: सिध्द हो जाता है।

Scanned with CamScanner